❍ 15 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *ड्रामा के पत्ते पर मज़बूत रहे ?*

➢➢ *एक दो को सावधान कर उन्नति को पाया ?*

➢➢ *सुख स्वरुप बन सबको सुख दिया ?*

➢➢ *हर्षित और गंभीर बनने के बैलेंस को धारण किया ?*

————————————————————

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ *समय प्रमाण लव और ला का बैलेन्स रखो लेकिन ला में भी लव महसूस हो। इसके लिए आत्मिक प्यार की मूर्त बनो* तब हर समस्या को हल करने में सहयोगी बन सकोगे। *शिक्षा के साथ सहयोग देना ही आत्मिक प्यार की मूर्त बनना है।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बापदादा के समीप रत्न हूँ"*

〰✧ सदा स्वयं बाप के समीप रत्न समझते हो? समीप रत्न की निशानी क्या होगी? समीप अर्थात् समान। समीप अर्थात् संग में रहने वाले। संग में रहने से क्या होता है? वह रंग लग जाता है ना। *जो सदा बाप के समीप अर्थात् संग में रहने वाले हैं उनको बाप का रंग लगेगा तो बाप समान बन जायेंगे।* समीप अर्थात् समान ऐसे अनुभव करते हो? हर गुण को सामने रखते हुए चेक करो कि क्या क्या बाप समान है? हर शक्ति को सामने रख चेक करो कि किस शक्ति में समान बने हैं। आपका टाइटल ही है 'मास्टर सर्वगुण सम्पन्न, मास्टर सर्व शक्तिवान'।

〰✧ तो सदा यह टाइटल याद रहता है? सर्वशक्तियाँ आ गई अर्थात् विजयी हो गये फिर कभी भी हार हो नहीं सकती। जो बाप के गले का हार बन गये उनकी कभी भी हार नहीं हो सकती। *तो सदा यह स्मृति में रखो कि मैं बाप के गले का हार हूँ, इससे माया से हार खाना समाप्त हो जायेगा। हार खिलाने वाले होंगे, खाने वाले नहीं।* ऐसा नशा रहता है?

〰✧ हुनमान को महावीर कहते हैं ना। महावीर ने क्या किया? लंका को जला दिया। खुद नहीं जला, पूंछ द्वारा लंका जलाई। तो लंका को जलाने वाले महावीर हो ना। माया अधिकार समझकर आये लेकिन आप उसके अधिकार को खत्म कर अधीन बना दो। हनमान की विशेषता दिखाते हैं कि वह सदा सेवाधारी था।

अपने को सेवक समझता था। तो यहाँ जो सदा सेवाधारी हैं वही माया के अधिकार को खत्म कर सकते हैं। जो सेवाधारी नहीं वह माया के राज्य को जला नहीं सकते। हनुमान के दिल में सदा राम बसता था ना। एक राम दूसरा न कोई। *तो बाप के सिवाए और कोई भी दिल में न हो। अपने देह की स्मृति भी दिल में नहीं। सुनाया ना कि देह भी पर है, जब देह ही पर होगई तो दूसरा दिल में कैसे आ सकता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *आसन ही सिंहासन प्राप्त कराता है।* अब आसन है फिर सिंहासन है। हलचल वाला आसन पर एकाग्र होकर बैठ नहीं सकता। इसलिए कहा *व्यर्थ समाप्त, अशुभ समाप्त* - तो अचल हो जायेंगे और अचल स्थिति के आसन पर सहज और सदा स्थित हो सकेंगे। देखो, आप सबका यादगार यहाँ अचलघर है। अचलघर देखा है ना? यह किसका यादगार है?

〰✧ *आप सबके स्थिति का यादगार यह अचलघर है।* अनुभव करो, ट्रायल करते जाओ, यूज करते जाओ। ऐसे नहीं समझ लेना, हाँ, सर्व शक्तियाँ तो हैं ही। समय पर यूज हो। यूज नहीं करेंगे तो समय पर धोखा मिल सकता है। इसलिए छोटी-मोटी परिस्थिति में यज करके देखो। परिस्थितियाँ तो आनी ही हैं.

आती भी हैं। पहले भी बापदादा ने कहा है कि वर्तमान समय अनुभव करते हुए चलो।

〰✧ हर शक्ति का अनुभव करो, हर गुण का अनुभव करो। *ऐसे अनुभवी मूर्त बनो जो कोई भी आवे तो आपके अनुभव की मदद से उस आत्मा को प्राप्ति हो जाए।* दिन-प्रतिदिन आत्मायें शक्तिहीन हो रही हैं, होती रहेगी। ऐसी आत्माओं को आप अपनी शक्तियों की अनुभूतियों से सहारा बन अनुभव करायेंगे। अच्छा। मालिक है ना तो मालेकम सलाम, बाप कहते हैं - मालिकों को सलाम। अच्छा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *सभी ने बाप से पूरा-पूरा अधिकार ले लिया है? पूरा अधिकार लेने के लिए पुराना सब कुछ देना पड़े। तो दोनों सौदे किये हैं ना?* या तेरा सो मेरा लेकिन मेरे को हाथ नहीं लगाना- ऐसे तो नहीं है ना? *जब एक शब्द बदल जाता है अर्थात् मेरा तेरे में बदल जाता तो डबल लाइट हो जाते हैं।* ज़रा भी मेरापन आया तो ऊपर से नीचे आ जाते हैं। तेरा तेरे अर्पण तो सदा डबल लाइट और सदा ऊपर उड़ते रहेंगे अर्थात् ऊँची स्थिति में रहेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

_____

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- लौकिक अलौकिक परिवार से तोड़ निभाकर मोहजीत बनना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा रूपी पतंग इस धरती से ऊपर अम्बर में उडती हुई हिचकोले खाती ख़ुशी ख़ुशी झूमती हुई सैर कर रही हूँ...* लौकिक अलौकिक संबंधों रूपी काँटों में फंसकर मैं आत्मा रूपी पतंग उड़ नहीं पा रही थी... अब मुझ आत्मा रूपी पतंग की डोर सिर्फ और सिर्फ प्यारे बाबा के हाथों में है... जिससे मैं आत्मा सदा फर्श से न्यारी रह फ़रिश्ता बन उडती रहती हूँ... *सैर करते करते अब मैं चली अपने वतन प्यारे मीठे बाबा के पास...*

❉ *विकारी संबंधो से ममत्व निकालने राजयोग का ज्ञान देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* “मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता की दिल पसन्द मणि हो... तो इस खुदाई नशे से भरकर दुनिया में रहते हुए भी उपराम रहो... अपने राजयोगी होने की खुमारी की सदा दिल दिमाग पर छाये हुए... *विकारी दुनिया से अछूते होकर कार्य व्यवहार करो... ईश्वरीय प्रतिनिधि बन सम्बन्धो को तोड़ मात्र निभाते रहो...”*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा जन्म-जन्मान्तर के इन संबंधों के चक्रव्यूह से बाहर निकलकर कहती हूँ:-* “हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... जिस विकारी दुनिया ने मुझे दुखी और खाली सा किया... अब उस दुनिया से मेरा कोई नाता न हो... *मात्र तोड ही बस मझे तो निभाना है... और अपनी यादो में मीठे बापदादा और अपने

सजीले घर को ही बसाना है..."*

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा के सत्य स्वरुप की स्मृति दिलाते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... देह के मटमैलेपन और विकारो के दलदल ने सत्य स्वरूप को भुला दिया... *अब जो मीठे बाबा ने फूलो सी गोद में लेकर राजयोगी बनाया है तो हर कर्म में अपनी शान को याद रखो... अपने सत्य स्वरूप को यादो में कायम रख कर ही दुनियावी कारोबार करो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने निज स्वरुप में स्थित होकर आनंद विभोर होती हुई कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा सारे विकारी सम्बन्धो से उपराम होकर आपकी मीठी यादो में अपने राजयोगी के नशे में खो रही हूँ...* इस विकारी दुनिया से अलग अपनी ज्योतिमय दुनिया को यादो में बसाये देवताई स्वरूप को पाती जा रही हूँ..."

❊ *मेरा बाबा अपने रूहानी रंगों से मुझ आत्मा रूपी पतंग को सजाते हुए कहते है:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... विकारो में फंसकर गुणो और शक्तियो को खोकर खाली हो गए हो... *अब ईश्वरीय राहो में राजयोगी बन खुशियो के आसमाँ में खुशनुमा से उड़ते रहो...* इस धरा पर ईश्वर पिता का चुना हुआ गुलाब हूँ... इस नशे से भरकर अपनी रूहानियत की छटा बिखेरते रहो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सभी दुनियावी संबंधो से तोड़ निभाकर मोहजीत बनते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मुझ आत्मा को चुनकर अपनी गोद में बिठा कर मेरे मटमैले पन को धोकर आपने खूबसूरत राजयोगी सा सजा दिया है... *मै आत्मा अब विकारो से परे कमल फूल सा प्यारा न्यारा जीवन जी रही हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ड्रामा के पट्टे पर मजबूत रहना है*"

➳ _ ➳ इस बेहद के सृष्टि ड्रामा में पार्ट बजाने वाली मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ जिसने आदि से लेकर अंत तक इस बेहद ड्रामा में कल्प - कल्प हीरो पार्ट बजाया है। *इस बात को स्मृति में लाते ही पूरे 84 जन्मो का पार्ट मेरे सामने एक पिक्चर के रूप स्पष्ट होने लगता है*। सबसे पहले परमधाम में मेरा अनादि सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप जहां से मैं आत्मा सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में ही अपने घर परमधाम से सृष्टि रूपी रंगमंच पर इस बेहद के ड्रामा में पार्ट बजाने के लिए नई सतोप्रधान सतयुगी दुनिया मे अवतरित हुई।

➳ _ ➳ एक ऐसी दुनिया जो अपरमअपार सुख, शान्ति और सम्पन्नता से भरपूर थी। जहाँ देवतायें निवास करते थे। *ऐसी दैवी दुनिया मे 20 जन्म इतना सुंदर पार्ट बजाने के बाद द्वापर युग मे भी पूज्य आत्मा बन मैने विशेष पार्ट बजाया*। ईष्टदेवी बन अपने भक्तों की हर मनोकामना को मैने पूर्ण किया। मन्दिरों में स्थापित मेरे जड़ चित्र आज भी भक्तों की हर मनोकामना को पूरा कर रहें हैं। *और अब मेरा यह ब्राह्मण जीवन भी कितना श्रेष्ठ है। स्वयं भगवान मेरी पालना कर रहें हैं। सर्व सम्बन्धो का सुख मुझे दे रहें हैं। "वाह ड्रामा वाह" और "वाह मेरा पार्ट वाह"*।

➳ _ ➳ इस बेहद के खूबसूरत ड्रामा में आदि से अंत तक के अपने विशेष हीरो पार्ट को मन बुद्धि से देखते - देखते अब मैं स्वयं से प्रतिज्ञा करती हूँ कि अब इस अंतिम जन्म में जबकि सभी हिसाब किताब चुकतू होने है इसलिए इस अंतिम जन्म में अनेक परिस्थितियों और दुखद घटनाओं के रूप में आने वाले कर्मभोग से मुझे घबराना नही है बल्कि *ड्रामा के पट्टे पर मजबूत रहना है और बाबा की याद से हर कर्मभोग को सहज रूप से हँसते - हँसते चुकतू करना है*। स्वयं से यह प्रतिज्ञा करते - करते मैं अनुभव करती हूँ जैसे बाबा मेरी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने का बल मुझमे भरने के लिए मुझे अपनी ओर खींच रहें हैं।

➳ _ ➳ अशरीरी बन देह और देह की दुनिया से किनारा कर, ज्ञान और योग के पंख लगा कर मैं आत्मा अब अपने निराकार शिव पिता परमात्मा के

पास उनके धाम की ओर चल पड़ती हूँ। *कुछ क्षणों की सुंदर, लुभावनी रूहानी यात्रा करके मैं पहुंच जाती हूँ उस अद्भुत दुनिया परमधाम में अपने प्यारे मीठे बाबा के पास*। संकल्पों विकल्पों की हलचल से दूर शांति के सागर बाप के सामने मैं आत्मा गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ। मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं अपलक शक्तियों के सागर अपने बाबा को निहार रही हूँ।

➳ _ ➳ धीरे - धीरे अब मैं आत्मा अपने मीठे प्यारे बाबा की ओर बढ़ रही हूँ। उनके समीप पहुंच कर मैं जैसे ही उन्हें टच करती हूँ शक्तियों का झरना फुल फोर्स के साथ बाबा से निकल कर अब मुझ आत्मा में समाने लगता है। *मेरा स्वरूप अत्यंत शक्तिशाली व चमकदार बनता जा रहा है। मास्टर बीजरूप अवस्था में स्थित हो कर अपने बीज रूप परमात्मा बाप के साथ यह मंगलमयी मिलन मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करवा रहा है*। परमात्म लाइट मुझ आत्मा में समाकर मुझे पावन बना रही है। मैं स्वयं में परमात्म शक्तियों की गहन अनुभूति कर रही हूँ।

➳ _ ➳ शक्ति स्वरुप बनकर अब मैं परम धाम से नीचे आ रही हूँ। अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर इस बात को अब मैं सदा स्मृति में रखती हूँ कि "मैं विशेष हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ"। मुझे केवल अपने पार्ट को देखना है। दूसरों के पार्ट को देख कर प्रश्नचित नही बनना। *बुद्धि में इस बात को अच्छी रीति धारण कर अब मैं ड्रामा के पट्टे पर मजबूत रहकर इस बेहद ड्रामा में अपना ऐक्यूरेट पार्ट बजा रही हूँ*। ड्रामा में हर आत्मा के पार्ट को साक्षी हो कर देखते हुए और जीवन मे आने वाली हर परिस्थिति को खेल समझते हुए क्या,क्यो, और कैसे की क्यू से मुक्त होकर सेकण्ड में फुल स्टाप लगा कर एकरस स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ अब मैं सहज रीति कर रही हूँ।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सख स्वरूप बन सबको सख देने वाली आत्मा हूँ।*

✺ *मैं मास्टर सुखदाता आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा हर्षित और गम्भीर बनने के बैलेन्स को धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव एकरस स्थिति में स्थित रहती हूँ ।*
✺ *मैं सहजयोगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ होलीहंसों की विशेषता को सभी अच्छी तरह से जानते हो। *'सदा होली हैपी हंस अर्थात् स्वच्छ और साफ दिल'*। ऐसे होलीहंसों की स्वच्छ और साफ दिल होने के कारण *हर शुभ आशायें सहज पूर्ण होती हैं। सदा तृप्त आत्मा रहते हैं। श्रेष्ठ संकल्प किया और पूर्ण हुआ।* मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्यों? बापदादा को सबसे प्रिय, सबसे समीप साफ दिल प्यारे हैं। *साफ दिल सदा बापदादा के दिलतख्त नशीन, सर्व श्रेष्ठ संकल्प पूर्ण होने के कारण वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं।* सरलता की निशानी है - दिल. दिमाग. बोल एक समान। दिल में एक.

बोल में और (दूसरा) - यह सरलता की निशानी नहीं है। *सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। होलीहंस की विशेषता - सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।*

✺ *ड्रिल :- "होली हंस की विशेषता- सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि को स्वयं में अनुभव करना"*

➳ _ ➳ *मैं होली हंस आत्मा हूँ...* ज्ञान सूर्य शिव बाबा से ज्ञान गुण और शक्तियों की किरणें निरंतर मुझ आत्मा पर आ रही हैं... और *मेरा जीवन दिव्यता से भरपूर हो रहा है... मेरा मन निर्मल हो रहा है, बुद्धि स्वच्छ बन रही है और संस्कार दिव्य हो रहे हैं...*

➳ _ ➳ *मैं होली हंस आत्मा अवगुण रूपी कंकड़-पत्थर को अलग कर गुण रुपी मोती चुगने वाली हूँ...* मैं होली हंस आत्मा *सदा दूसरों के गुणों को देखती हूँ... और गुणों का ही वर्णन करती हूँ...* मुझ होली हंस का दिल स्वच्छ और साफ है... मुझ आत्मा की सभी आशाएं सहज ही पूर्ण हो जाती है... मैं होली हंस आत्मा सदा बापदादा की सबसे प्रिय लाडली बच्ची हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा होली हंस हूँ... *इसलिए मैं किसी के अवगुणों को नहीं देखती हूँ... अब मेरी अवगुणी दृष्टि, गुणग्राही दृष्टि में परिवर्तन हो रही है...* हर एक के गुणों व विशेषताओं को ही... देखने का लक्ष्य रखने वाली मैं आत्मा होली हंस हूँ...

➳ _ ➳ *मैं होली हंस आत्मा किसी की निंदा, ग्लानि और परचिन्तन कभी नहीं करती...* सदा फॉलो फादर करती हूँ... जैसे ब्रह्मा बाबा जितना नॉलेजफुल थे उतना ही उनका सरल स्वभाव भी था... *मैं होली हंस आत्मा भी सफलतामूर्त बनने के लिए... सरलता और सहनशीलता के गुणों को धारण करती हूँ...*

➳ _ ➳ स्वच्छ और साफ दिल होने के कारण मैं होली हंस आत्मा *सदा तृप्त रहती हूँ...* जो भी श्रेष्ठ संकल्प करती हूँ... *स्वतः ही सब पूर्ण हो जाते हैं...* सदा मैं आत्मा *बापदादा के दिलतख्तनशीन* रहती हूँ... *मैं निरहंकारी,

निःस्वार्थी व निर्माण चित्त आत्मा हूँ... मेरा दिल, दिमाग, बोल सब एक समान होते हैं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔